संकटमय संकुचित सोच की संजीवनी है - नारी

-ब्र.कु.निधि, कानपुर

इतिहास गवाह है कि झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई, मेवार की महारानी व महाराणा प्रताप की माँ जैवन्ता बाई, सीता, सावित्री और सती अनुसूया (महर्षि अत्री की पत्नी जिन्होंने सतीत्व के बल से ब्रह्मा विष्णु और महेश को छोटे बच्चे बना दिया था) जैसी नारियों को अपने पति का सहयोग एवं साथ देने के लिए देवी की तरह पूजा गया।

इक्कीसवीं सदी में आगे बढ़ती नारी नित्य नई भूमिकाओं में सफलता के नए झंडे गाढ़ रही है। जो स्त्री कल तक अबला, दुर्बल व कमज़ोर समझी जाती थी और जिसे कदम-कदम पर पुरुष के सहारे की ज़रूरत पड़ती थी आज वो घर, समाज सब जगह स्वयं की सशक्त पहचान बनाने में कामयाब हो रही है। नारी की नई सहस्राब्दी में सर्वदा एक नई छवि उभर रही है।

राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर

इस संदर्भ में राष्ट्र-निर्माता स्वामी विवेकानंद ने वर्षों पहले कहा था - किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है वहाँ की महिलाओं की स्थिति। हमें महिला शक्ति का उद्धारक नहीं, वरन उनका सहायक, साथी बनना चाहिए। भारतीय नारियां संसार की अन्य किन्हीं भी स्त्रियों की भांति अपनी समस्याओं को सुलझाने की क्षमता रखती हैं। ज़रूरत है, उन्हें उपयुक्त अवसर देने की। इसी आधार पर भारत के सुनहरे भविष्य की संभावनाएँ बलवती हैं।

आज की नारी जीवन के सभी आयामों में ढ़लकर सर्वश्रेष्ठ नायिका की भूमिका बखूबी निभा रही है। माँ, बहन, पत्नी, बेटी, बहू आदि सभी रिश्तों को निभाने के साथ-साथ बाहरी दुनिया में भी महिलाएँ कामयाबी के परचम लहरा रही हैं। कल की साधारण-सी गृहिणी आज कुशल प्रबंधक बनकर अपने कार्यों, दायित्वों का निर्वहन कर रही है। अपनी नई भूमिका में वह बेहद सृजनशील व सूक्ष्म नज़र आ रही है। स्त्री की बदलती भूमिका के संबंध में उद्यमी प्रियम्वदा बहन का कहना है कि ''मेरे पति ने मुझे बिज़नेस करना सिखाया। घर से बाहर निकलने का अवसर दिया और हर काम में साथ रखा। मुझे पेंटिंग का शौक था। पति ने पेंटिंग का सामान लाकर दिया व अपनी कला को निखारने के लिए प्रोत्साहित किया। यही नहीं जब मेरा बेटा केवल नौ महीने का था तब कार चलाना भी सिखाया। आज मैं उनके न रहने पर स्वतंत्र रूप से बिज़नेस तथा घर की ज़िम्मेदारियों का बखूबी निर्वहन कर रही हूँ।'' इससे यह सिद्ध होता है कि महिलाएं ज़रूरत पड़ने पर कोई भी रोल निभाने की प्रतिभा रखती है। बस उसे मौके की तलाश रहती है।

महिला अधिकार : वही पुरानी सोच एवं नज़रिया

तकरीबन भारत की आधी जनसंख्या महिलाओं की है। सन् 2011 के जनसंख्या सर्वेक्षण के अनुसार भारत में हर 1000 पुरुषों के अनुपात में 917 महिलाएँ हैं केवल। पुरुष प्रधान समाज में नारी को सदा अबला व कमज़ोर समझा जाता रहा है। शारीरिक दृष्टिकोण से महिलाएँ पुरुषों से अधिक कोमल, नाज़ुक तथा दुबली-पतली होती हैं परंतु स्वभाव-संस्कार से वो ज़्यादा सहनशील, शांत, दृढ़विश्वासी एवं ममतामयी होती हैं, फिर भी संसार भर में स्त्रियाँ दूसरे दर्जे की ज़िम्मेदारियाँ संभाल रही हैं। पौराणिक कथाओं, वेदों, उपनिषद आदि में पतिव्रता नारियों को बहुत आदर एवं प्रशंसा भाव से देखा जाता था। एक बेटी, एक पत्नी, एक माँ, दादी इत्यादि की भूमिका ही जीवन भर निभाने के लिए विवश थी तब औरत। इतिहास गवाह है कि झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई, मेवार की महारानी व महाराणा प्रताप की माँ जैवन्ता बाई, सीता, सावित्री और सती अनुसूया (महर्षि अत्री की पत्नी जिन्होंने सतीत्व के बल से ब्रह्मा विष्णु और महेश को छोटे बच्चे बना दिया था) जैसी नारियों को अपने पति का सहयोग एवं साथ देने के लिए देवी की तरह पूजा गया। यह भी मान्यता थी कि जो पत्नी अपने पति की सेवा में जीवन निकालती है, उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। रानी लक्ष्मी बाई, जैवन्ता बाई, चाँद बीबी जैसी वीरांगनाओं ने अपने अदम्य साहस, सूझ-बूझ तथा रण-कौशल से अंग्रेजी शासन को मुँह तोड़ जवाब देकर अमर नायिकाओं में अपना नाम सुनहरे अक्षरों में दर्ज़ कराके भारत में नया इतिहास रचा। इसके बावजूद हर युग में, हर समाज में स्त्रियों को दोयम दर्ज़े का नागरिक माना जाता रहा है। आज़ादी के बाद देश के संविधान द्वारा पुरुषों और महिलाओं दोनों को सभी क्षेत्रों में समान अधिकार दिए गए। परंतु वास्तविकता यह है कि बहुत जगह आज भी स्त्री को समान हक नहीं मिला हुआ है। जिसके कई कारण हैं जैसे :- (1) सदियों से चले आ रहे रीति-रिवाज़ व रूढ़ियाँ (2) स्त्रियों का एक बड़ा प्रतिशत साक्षर नहीं है (3) महिला अधिकारों की अवहेलना (4) पुरुष प्रधान समाज की संकीर्ण मानसिकता (5) मौजूदा सामाजिक व्यवस्था।

बंदिशों एवं रोक-टोक के बावजूद बनाई पहचान

इन सब बंदिशों एवं रोक-टोक के बावजूद भारतीय नारी ने घर की दहलीज़ को लांघ कर हर क्षेत्र में अपनी सशक्त पहचान बनाई है। बैंकों की चेयरपर्सन, सी.ई.ओ, कॉरपोरेट कंपनियों की बागडोर संभालने से लेकर भारतीय पुलिस सेवा, प्रशासनिक सेवा एवं वायु सेना आदि में महिलाएं महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत हैं। महिला उद्यमियों जैसे बायोकॉन इंडिया प्रा.लि. की किरन मजूमदार शॉ, पेप्सिको की निर्देशिका इंदिरा नूई, रिलायंस इंडस्ट्रीज़ की नीता अंबानी, सेंटर फॉर एनवायरमेंट स्ट्डीज़ की सुनीता राव इत्यादि ने पुरुष वर्चस्व वाले क्षेत्रों में अपनी एक पुख्ता पहचान बनाई है। पी.टी.उषा, साइना नेहवाल, शाइनी विलसन, सानिया मिर्ज़ा, कल्पना चावला, तीजन बाई आदि ने देश व विदेश में भारत का सिर गर्व से ऊँचा किया है। साहित्य के क्षेत्र में भी नई पीढ़ी में अरुंधती रॉय (बुकर पुरस्कार से सम्मानित), अनीता देसाई, जुम्पा लहरी (पुलित्ज़र पुरस्कार से सम्मानित), तस्लीमा नसरीन इत्यादि ने स्त्री भावनाओं एवं दृष्टिकोण को खुलकर समाज के सामने रखने का साहसपूर्ण और सराहनीय कार्य किया है। कुछ समय पहले ही देश की प्रथम महिला राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल बनी थीं जिन्होंने सौम्यता तथा शालीनता का अद्भुत उदाहरण सारी दुनिया के सामने प्रस्तुत किया। ग्रामीण महिलाओं की राजनीति में भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु हमारी सरकार ने संसद में बिल पास किया। जिसके तहत संसद एवं अन्य चुनावी संस्थाओं की एक तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित कर ली गईं। सन् 1975 में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 8 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मान्यता देने की घोषणा की गई। इस कदम से महिलाओं की स्थिति में सुधार होना आरंभ हुआ और नारी सशक्तिकरण को बल मिला है। इसी जज़्बे को सलाम करते हुए भारतीय सरकार ने प्रथम महिला बैंक निर्भया का शुभारंभ किया है।

बड़ी तस्वीर को देखना होगा।

स्पेस में जाने वाली पहली भारतीय महिला, कल्पना चावला, का मृत्यु के पूर्व यही कहना था कि महिलाओं को वही करना चाहिए जो करने की वास्तविक इच्छा उन्हें है।

उन्होंने एक बार कहा था कि स्पेस में जब वे थीं तो उन्हें केवल अपने विचारों का ही भान था। बाकी, शरीर तो वज़नरहित होने कारण महसूस ही नहीं हो रहा था। केवल अपनी आंतरिक ऊर्जा को महसूस कर उन्हें अत्यंत हर्ष का अनुभव हुआ था।

उन्होंने यह भी कहा कि मैं धरती माँ के लिए अपनी ज़िम्मेवारियों के प्रति जागृत भी हुई। मैं जब धरती पर लोगों को छोटी-छोटी बातों पर लड़ते-झगड़ते देखती हूँ तो मुझे दुःख भी होता है और आश्चर्य भी। हम इन मामूली से भँवरों में फँसे हुए हैं और इस उधेड़बुन में एक पूरी नदी को भूल जाते हैं। हमें बड़ी तस्वीर को देखना होगा। मैं किसी देश की नहीं समस्त दुनिया की नागरिक हूँ। मेरी आँखों में पूरी धरती और नीले आकाश का प्रतिबिंब दिखाई देता है।

- कल्पना चावला

उनके कौशल एवं जज़्बे ने बनाई पहचान

भारतीय नारी जिसे अबला कहा जाता रहा है, ने आज अपने कौशल एवं जज़्बे से विश्वभर में अपनी एक अलग पहचान कायम की है, आज भारतीय महिलाएँ चूल्हे-चौके से बाहर आकर परिवार, समाज व देश निर्माण में अपना अमूल्य योगदान दे रही हैं। इसी संदर्भ में सन् 1937 में परमपिता शिव के आदेश पर ब्रह्मा बाबा द्वारा स्थापित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में माताओं व कन्याओं को हर कार्य में शिव भगवान ने आगे रखा और ज्ञान कलष उनके ऊपर रखा। संस्थान की स्थापना होने से लेकर आज तक सभी विभागों तथा समस्त कार्यों में दादियों, बड़ी बहनों, माताओं, छोटी कन्याओं ने ईश्वरीय सेवाओं को करने एवं सेवाओं के विस्तार में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जिसके परिणामस्वरूप आज विश्व के 137 से अधिक देशों में करीबन 9500 सेवा केन्द्र, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा खोले जा चुके हैं तथा शिव-पिता, ब्रह्मा-माँ के आशीर्वाद व दादी जानकी, दादी हृदयमोहिनी, दादी रतनमोहिनी एवं अन्य ईश्वरीय बहन-भाइयों के अथक प्रयासों से विश्वविद्यालय वृद्धि को पा रहा है। नारी की सहनशीलता, धैर्यता, कोमलता, सहृदयता, ममतामयी छवि, सहिष्णुता आदि गुणों रूपी खज़ाने को पहचानकर परमेश्वर शिव ने उन्हें सतयुगी दुनिया में सभी आत्माओं को ले जाने हेतु अग्र-वाहक बनाया है तो क्यों नहीं हम भी स्त्री को स्वावलंबी एवं आत्म-सम्मान के साथ खड़ा होने में सहयोगी बने जो एक सभ्य समाज के लिए गौरव की बात होगी।

महिला दिवस : कब होगा सार्थक?

फिर एक और महिला दिवस 8 मार्च, 2014 दहलीज़ पर आया। लेकिन महिलाओं को सम्मान, प्रेम, स्नेह देने हेतु मनाया जाने वाला विश्व महिला दिवस कहाँ तक अपने उद्देश्य में सफल हुआ है? हालांकि नारी को स्वतंत्रता तथा अधिकार मिलने लगे हैं लेकिन आज भी समाज में स्त्री की वो अहमियत नहीं है जो पुरुष की है। साथ ही महिला अत्याचार की बढ़ती घटनाओं ने भारतीय नारी की सुरक्षा पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। कहीं अकेले जाने से पहले महिलाओं को सोचना पड़ता है, हरदम डर बना रहता है कि कब, कहाँ, कौन-सा भेड़िया ताक लगाए बैठा है कि शिकार मिलते ही उस पर टूट पड़े। ऐसा कुकृत्य करने वाले पुरुष सारे सभ्य समाज के लिए एक कलंक हैं।